Review of ReseaRch
ISSN: 2249-894X
Impact Factor : 5.7631(UIF)
Volume - 12 | Issue - 8 | May - 2023

भारतीय विदेश नीति : उपलब्धियां एवं चुनौतियां

डॉ. अभय कुमार
सहायक प्राचार्य (अतिथि), राजनीति विज्ञान विभाग, एम. के. कॉलेज
लहेरियासराय, (एल.एन.एम.यू.) दरभंगा

शोध आलेख का सार

भारत की विदेश नीति भारत की स्वतंत्रता से लेकर आज तक सभी देशों के साथ मित्रता के सेतु बांधने तथा सहयोग करने की नीति रही है चाहे उन देशों की आर्थिक तथा राजनीतिक प्रणालियां कैसी भी क्यों ना हो। इसने भारत के राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित रखने के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षा को उन्नत करने, राष्ट्रों के आपस में न्यायपूर्ण तथा सम्मानजनक संबंधों को बनाए रखने तथा अंतरराष्ट्रीय कानून के सम्मान तथा संधि उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भारत के विदेश संबंधों का क्रियान्वयन कुछ प्रमुख सिद्धांतों से संचालित रहा है, उनमें प्रमुख है:- भारत की प्रभुसत्तात्मक स्वतंत्रता और राष्ट्रीय हितों की रक्षा, अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए सभी शांतिप्रिय देशों तथा संयुक्त राष्ट्र से सहयोग, स्वतंत्र विदेश नीति का अनुसरण, विश्व राजनीति में समान भागीदारिता की प्राप्ति के लिए तीसरे विश्व से एकता तथा भाईचारे को प्रोत्साहित करना तथा तीसरी दुनिया के देशों के हितों की रक्षा के लिए कार्य करना।1

मूल शब्द: विदेश नीति, गुटनिरपेक्षता, उपनिवेशवाद, यथार्थवाद, आतंकवाद, उदारीकरण ।

प्रस्तावना

भारत अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए गुटनिरपेक्षता, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय हितों में तालमेल पर आधारित एक स्वतंत्र विदेश नीति का निर्माण एवं संचालन शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के पद पर चलता रहा है। नेहरू जी के गुटनिरपेक्षता की नीति के कारण ही भारतीय विदेश नीति को गुटनिरपेक्षता की नीति माना जाता रहा है। गुटनिरपेक्षता ने ही भारत को अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा दिलाई।2 गुटनिरपेक्षता की नीति के रूप में भारत की विदेश नीति कई उतार-चढ़ाव के दौर से गुजरी है। अन्य देशों की विदेश नीतियों की तरह भारत की विदेश नीति भी राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने तथा आर्थिक विकास के प्रयासों में कहीं सफल तो कहीं असफल रही है। गुटनिरपेक्षता को अपनाने का यही कारण था कि भारत विश्व राजनीति में शीत युद्ध में शामिल हुए बिना तथा अपने राष्ट्रीय हितों को दांव पर लगाए बिना, सक्रिय भूमिका निभाना चाहता था। भारत ने विशेषतः विश्व शांति सुरक्षा के प्रति साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद तथा नस्लवाद की समाप्ति

के प्राप्ति, एशियाई तथा अफ्रीकी राष्ट्रों के मुक्ति आंदोलनों के प्रति तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रति अपने अंतर्राष्ट्रीय उत्तरदायित्व को समझा।3

भारत की विदेश नीति कभी भी चीन की महत्वाकांक्षा तथा कूटनीतिक चालों को नहीं समझ सकी और भारत की सैकड़ों मील भूमि चीन के कब्जे में चली गई। इसी भारत ने पाकिस्तान के प्रति भी संतुष्टिकरण की नीति अपना कर बहुत बड़ी गलती की। कश्मीर समस्या इसी का परिणाम है। विदेश नीति विश्लेषकों का मानना है कि नेहरू जी ने भारत की सुरक्षा के प्रति उदासीनता दिखाई और यथार्थवादिता की बजाए आदर्शवाद पर ही विदेश नीति को प्रतिष्ठित किया।4 इसकी एक सकारात्मक विशेषता यह रही कि भारत किसी महाशक्ति का पिछलग्गू देश नहीं बना और भारत ने स्वतंत्र विदेश नीति का संचालन करते हुए अपने आर्थिक विकास का मार्ग चुना।

विदेश नीति के संचालन में लाल बहादुर शास्त्री ने आदर्शवादी नीति और यथार्थवाद में सुंदर समन्वय किया। उन्होंने पाकिस्तान, इंडोनेशिया तथा चीन की भारत विरोधी मैत्री को ध्यान में रखकर ही विदेश नीति एवं रक्षा नीति का निर्धारण किया। उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा को विशेष महत्व देकर भारतीय विदेश नीति को यथार्थवादी बना दिया। उन्होंने महाशक्तियों के साथ संबंध सुधारने तथा गुटनिरपेक्षता की बजाय दक्षिण एशिया के अन्य पड़ोसी देशों के साथ संबंध पर बल दिया। उन्होंने 1965 में भारत-पाक युद्ध में रक्षा विभाग व सेना को स्वतंत्र नीति निर्धारण का अधिकार देकर विजयश्री को संभव बनाया। इस युद्ध में पाकिस्तान पर भारत की विजय ने भारतीय विदेश नीति का अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मान वापस दिलाया।5

श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी गुटनिरपेक्षता को अपनाने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। उन्होंने विदेश नीति को मजबूत करने एवं कूटनीति को विदेश नीति में प्रयोग करके व्यवहारिक कदम उठाए। इंदिरा गांधी ने बांग्लादेश के मुक्ति आंदोलन, बांग्लादेश की मान्यता, अमरीका के प्रति दृढ़ता, सोवियत संघ के साथ सम्मानजनक संबंधों से अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा की। 1971 ईस्वी में भारत ने सोवियत संघ के साथ शांति, मित्रता तथा सहयोग की संधि कर ली।6 उन्होंने शिमला समझौते द्वारा भारतीय विदेश नीति की आदर्शवादिता को भी बरकरार रखा। उन्होंने कंबोडिया तथा वियतनाम के मुक्ति आंदोलनों का भी पूरा समर्थन किया। सोवियत संघ के साथ शांति और मित्रता की संधि के अनुच्छेद- 8 में सैनिक संधि की अवधारणा का भी खंडन किया तथा इस प्रकार इस संधि ने किसी भी प्रकार से भारतीय गुट निरपेक्षता को सीमित नहीं कर सका तथा न ही किसी प्रकार से भारत का सोवियत संघ के साथ कोई गठबंधन हुआ। 1974 ईस्वी में भारत शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट द्वारा परमाणु क्लब में शामिल हुआ तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भारत का प्रभाव तथा स्थिति अधिक सुदृढ़ हो गई।7

जनता पार्टी की सरकार ने भी भारतीय विदेश नीति के मूल सिद्धांतों का ही पालन किया और उनमें कोई बदलाव नहीं किया। उन्होंने दोनों शक्ति गुटों तथा पड़ोसी देशों के साथ मधुर संबंध स्थापित करने पर विशेष बल दिया। नेपाल, बंगलादेश और पाकिस्तान के साथ भी मधुर संबंध स्थापित करने के प्रयास किए गए। इस अल्पकाल में ही भारत की विदेश नीति काफी सफल रही। आठवें दशक के मध्य में भारत की गुट निरपेक्षता अत्यधिक परिपक्व तथा संतुलित हो गई। इंदिरा गांधी के द्वितीय कार्यकाल के दौरान भारत स्वतंत्र विदेश नीति का पालन करता रहा तथा इसने महाशक्तियों तथा अन्य देशों द्वारा दिखाए मार्ग पर चलने से इंकार कर दिया। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा के 38 वें सत्र को संबोधित किया तथा तीसरे विश्व के अधिकारों को अंतरराष्ट्रीय संबंधों में प्राप्ति के लिए गुटनिरपेक्ष देशों को और अधिक शक्ति प्रदान की। 8 श्रीमती गांधी की सरकार ने दक्षिण- दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देने तथा गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के बीच संबंध तथा सहयोग बढ़ाने के कार्य हाथ में लिए।

राजीव गांधी की सरकार ने दक्षिण एशिया में भारत का वर्चस्व स्थापित करने पर अधिक जोर दिया। उन्होंने मालदीव में सैनिक क्रांति को विफल करने तथा श्रीलंका के जातीय संघर्ष को दबाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन्होंने दक्षिण अफ्रीकी सरकार के विरुद्ध आर्थिक प्रतिबंधों को लागू करने की मांग की और नेल्सन मंडेला को जेल से रिहा करने की पुरजोर अपील की। सार्क के निर्माण में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। भारत द्वारा गुटनिरपेक्ष आंदोलन, नि:शस्त्रीकरण तथा प्रजाति विरोधी उठाए गए कदम बहुत महत्वपूर्ण माने गए ।9 राजीव गांधी ने दक्षिण अफ्रीकी सरकार की रंगभेद की नीति का पुरजोर विरोध किया और नामीबिया की स्वतंत्रता और नेल्सन मंडेला की जेल से रिहाई में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

परिवर्तित परिस्थिति में भारत में आर्थिक उदारीकरण करने के लिए विदेश नीति में कुछ परिवर्तन किए गये ।इस दौरान भारत ने खुली अर्थव्यवस्था एवं बाजार मूल्य प्रणाली को भारतीय विदेश नीति में स्थान दिया। विदेश मंत्री इंद्र कुमार गुजराल के गुजराल सिद्धांत का प्रतिपादन करके अपने पड़ोसी राष्ट्रों के साथ भी बेहतर संबंधों को प्रमुखता दी। भारत ने रूस, चीन, श्रीलंका, इजराइल, ब्रिटेन आदि देशों के साथ मधुर संबंध स्थापित करने के प्रयास किए। वाजपेयी सरकार ने सभी पड़ोसी देशों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंधों को प्राथमिकता दी।10 इसी समय पांच परमाणु परीक्षण किए गए, जिसकी विश्व समुदाय ने निंदा की। परंतु भारत ने बिना किसी दबाव के अपनी स्वतंत्र विदेश नीति का संचालन किया। भारत ने पाकिस्तान के साथ समसामयिक आधार पर संबंध स्थापित करने के लिए पहल की और लाहौर घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। इसके तहत दोनों देशों ने पर्यटन और व्यापार को बढ़ावा दिया तथा दोनों देशों के बीच रेल, बस तथा हवाई सेवाएं प्रारंभ की गई। पाकिस्तान द्वारा 1999 में कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके भारत के शांति प्रयासों को चुनौती दी। इस घुसपैठ का मुंहतोड़ जवाब देकर भारत ने अपना राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सम्मान बरकरार रखा। मई 2004 में भारत में संगठित यूपीए सरकार ने गुटनिरपेक्षता की नीति का समर्थन किया और प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के नेतृत्व में विदेश नीति के क्षेत्र में कई सफलताएं हासिल की है।11

वर्तमान नरेंद्र मोदी की सरकार की विदेश नीति के अंतर्गत वैश्विक शक्तियों के साथ आगे बढ़ने और अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करते हुए भारत के सामरिक स्वायत्तता को बनाए रखना है। वर्तमान सरकार द्वारा राष्ट्रीय हितों को बढ़ावा देने के लिए सभी देशों से परस्पर संवाद के माध्यम से विदेश नीति को पुन: परिभाषित किया गया है। भारतीय विदेश नीति दूसरे देशों से केवल रक्षा उत्पादों की खरीद तक सीमित नहीं है बल्कि तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में भारत विकसित देशों के साथ प्रयत्नशील है। भारतीय विदेश नीति नेबरहुड फर्स्ट और एक्ट ईस्ट नीति के साथ आगे बढ़ रही है।12 मॉरीशस और सेशेल्स देशों की यात्रा और हिंद महासागर रिम एसोसिएशन के साथ संबंध बनाने के अलावा भारत सरकार ने हिंद महासागर क्षेत्र में एक मजबूत नींव बनाई है। भारत की विदेश नीति में आए बदलाव से भारत और जापान के बीच संबंध गहरे हुए हैं और यह संबंध विशेष सामरिक एवं वैश्विक साझेदारी तक पहुंच **गए** हैं। भारत और जापान के बीच निर्बाध समन्वय, अवसंरचना सहयोग, परमाणु ऊर्जा और तकनीकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति सरकार की विदेश नीति की उपलब्धियों को रेखांकित करते हैं।13

भारतीय विदेश नीति की उपलब्धियां :

भारतीय विदेश नीति की उपलब्धियों में राष्ट्रीय सुरक्षा की मजबूती महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में भारतीय विदेश नीति आदर्शवाद से यथार्थवाद की नीति की ओर आगे बढ़ गई है। हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की केंद्रीय तथा सामरिक स्थिति है। इसके राष्ट्रहित अनिवार्य रूप से हिंद महासागर के साथ जुड़े हुए हैं। भारत के विदेशी तथा तटीय व्यापार का एक बड़ा भाग हिंद महासागर की स्वतंत्रता पर निर्भर है। हिंद महासागर को शांति का क्षेत्र बनाने तथा

महाशक्तियों के आपसी विरोध तथा शीत युद्ध से मुक्त रखने का भारतीय विदेश नीति का लक्ष्य इसी सोच पर आधारित रहा है। भारत ने अपनी सैन्य क्षमता बढ़ाने के लिए विदेशों से अत्याधुनिक हथियार खरीदे और सैन्य तकनीक का भी आदान प्रदान किया। बदलते हुए विश्व परिदृश्य में भारत ने अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूती प्रदान की है।14

गुटनिरपेक्षता की नीति को दूसरी महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा सकती है, जो स्वतंत्र विदेश नीति के निर्धारण एवं कार्यान्वयन पर बोल देता है। यह नवोदित राष्ट्रों की समस्याओं को अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान करता है। गुटनिरपेक्षता की नीति को एक आंदोलन में बदलकर भारत ने रंगभेद, प्रजातिवाद, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध आवाज उठाई। इससे भारत की प्रतिष्ठा एशिया व अफ्रीका के देशों में बढ़ी। इस आंदोलन के मंच पर एशियाई-अफ्रीकी एकता का जन्म हुआ। दक्षिण-दक्षिण सहयोग की प्रक्रिया में भी भारत गुटनिरपेक्ष देशों का सहयोग प्राप्त करने में सफल रहा है।15

भारतीय विदेश नीति विश्व शांति व सुरक्षा की प्रबल पक्षधर रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अंदर और बाहर विश्व शांति के लिए किए गए प्रयासों में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। नि:शस्त्रीकरण और शस्त्रों की दौड़ रोकने के लिए उन सभी प्रयासों का समर्थन किया है, जो सार्वभौमिक और न्यायपूर्ण है। इसके अतिरिक्त भारत ने अंतरराष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण समाधान करवाने में भी अहम भूमिका निभाई। कोरिया विवाद, स्वेज नहर संकट और खाड़ी संकट को हल कराने में भी भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ में जो प्रयास किए वे भी विश्व शांति की दिशा में ही महत्वपूर्ण कदम है। भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ ही शांतिपूर्ण सह अस्तित्व पर आधारित संबंधों को सर्वोच्च प्रदान करता है।16

भारत संयुक्त राष्ट्र संघ का मौलिक सदस्य है तथा उसे इसके आदर्शों एवं सिद्धांतों में पूर्ण विश्वास है। संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के कार्यों तथा प्रोग्रामों में सक्रिय रूप से भाग लेना सदैव भारतीय विदेश नीति का मुख्य सिद्धांत रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ की विचारधारा इसका बहुमूल्य निवेश है। भारत ने इस संगठन के माध्यम से हिंद महासागर को शांति का क्षेत्र घोषित करवाने, नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की मांग उठाने तथा नवोदित राष्ट्र को स्वतंत्रता दिलाने में अहम भूमिका निभाई है। सामूहिक सुरक्षा, नि:शस्त्रीकरण तथा विश्व शांति के लिए किए गए प्रयासों में भी भारत ने विशेष भूमिका अदा की। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आतंकवाद की समस्या, पर्यावरण संतुलन, पृथ्वी की सुरक्षा, ओजोन परत की सुरक्षा आदि के संदर्भ में चलाए जा रहे अभियान में भारत पूरा सहयोग दे रहा है। 17

आर्थिक विकास की लक्ष्य प्राप्ति में भी भारतीय विदेश नीति की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत ने दूसरे देशों से प्राप्त आर्थिक मदद को गरीबी, भूख, बीमारी, बेरोजगारी आदि समस्याओं का समाधान करने के लिए किया है। साथ ही साथ विदेशों से मिलने वाली आर्थिक सहायता का उपयोग देश के औद्योगिक तथा संस्थागत ढांचे का विकास करने में किया है। भारत ने आर्थिक सुधारों को अपनाकर अपनी खराब अर्थव्यवस्था को पटरी पर ला दिया। आज भारत में विदेशी कंपनियां पूंजी निवेश को बढ़ावा दे रही है जो भारत के आर्थिक विकास में सहायक होगा।

भारत द्वारा नई अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की स्थापना के दिशा में किए गए प्रयासों ने तृतीय विश्व के देशों अथवा नवोदित राष्ट्रों का मन मोह लिया है। भारत द्वारा इस संबंध में किए गए प्रयासों ने भारत की विदेश नीति को अंतरराष्ट्रीय जगत में प्रतिष्ठा प्रदान की है। भारत द्वारा G-77, G-15, गैट, दक्षिण-दक्षिण सहयोग, सार्क तथा आसियान में निभाई गई भूमिका महत्वपूर्ण रही है।18 भारत द्वारा परमाणु- नि:शस्त्रीकरण तथा संयुक्त राष्ट्र के लोकतांत्रिकरण की मांग उठाए जाने से भी भारतीय विदेश नीति को सम्मान प्राप्त हुआ है।

चुनौतियां:

भारतीय विदेश नीति के समक्ष अनेक ऐसी चुनौतियां हैं, जिसका सामना भारत करता रहा है। सामरिक दृष्टि से संपन्न किए गए परमाणु प्रक्षेपास्त्र व तकनीक हस्तांतरण से संबंधित सभी समझौते भारत को राष्ट्रीय सुरक्षा के मार्ग में

सबसे बड़ी बाधा बनकर उभरे हैं। विकसित राष्ट्र द्वारा परमाणु अप्रसार से संबंधित नीति भी भारत के राष्ट्रीय हित के विपरीत ही है। चीन ने भारत के पड़ोसी देशों को भारत के विरुद्ध उकसाया है ताकि भारत की विदेश नीति को अपने प्रभाव में रखा जा सके।

आतंकवाद की समस्या भारतीय विदेश नीति के समक्ष सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। भारत प्रारंभ से ही अपने पड़ोसी राष्ट्रों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करता रहा है तथा उसकी नीति नेबरहुड फर्स्ट की रही है। बावजूद इसके भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान द्वारा अपनी भूमि का उपयोग आतंकवादी गतिविधियों के लिए किया जाता रहा है। अनेक आतंकी समूहों को प्रोत्साहित करने में पाकिस्तान की भूमिका रही है। हाल ही में उरी तथा पुलवामा में किया गया आतंकी हमला इसका ज्वलंत उदाहरण है। 19

नीति निर्माता अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान का पर्दाफाश करना चाहते हैं और उसे अलग थलग करना चाहते हैं, लेकिन अभी पाकिस्तान को उसके कुत्सित इरादों से तथा भारत विरोधी हमलों एवं गतिविधियों में लिप्त रहने से रोकने के लिए काफी नहीं रहा है। उल्टे पाकिस्तान ने विशेष रुप से तालिबान से घिरे अफगानिस्तान के संदर्भ में रणनीतिक रूप से अपने बेहतर स्थिति का पहले अमेरिका तथा पश्चिम और अब रूस से लाभ उठाया है।

चीन हर मुश्किल में पाकिस्तान का दोस्त बना रहा है तथा वैश्विक चिंताओं को नजरअंदाज कर हर परिस्थिति में पाकिस्तान का साथ निभाता रहा है। हमारे अन्य पड़ोसी भी अक्सर क्षेत्रीय ताकतों विशेषकर चीन से अधिक से अधिक लाभ लेने के लिए दांव खेलते रहते हैं। उनके राष्ट्रीय हितों के लिहाज से देखा जाए तो ऐसी कूटनीति समझ में आती है लेकिन इनके कारण हमारी सुरक्षा तथा राष्ट्रीय हितों से समझौता हो जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

- प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य भारतीय विदेश नीति को वैश्विक रूप में प्रतिस्थापित करना है।
- विदेश नीति के द्वारा भारत के राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करना ।
- भारतीय विदेश नीति के गतिशीलता को स्पष्ट करना ।
- बदलते परिवेश में भारतीय विदेश नीति की सार्थकता ।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध आलेख में द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से ऐतिहासिक, सैद्धांतिक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं नवीन पद्धतियों को अपनाते हुए शोध आलेख को मौलिकता प्रदान किया गया है। इस कार्य हेतु आवश्यक सामग्री विदेश मंत्रालय, भारत सरकार दिल्ली के अभिलेखों, राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय पुस्तकालयों, इन्टरनेट एवं शोध संस्थानों आदि में उपलब्ध, समाचार-पत्र, एवं अन्य प्रासंगिक सामग्रियों का अध्ययन किया गया है, ताकि निष्कर्ष पर पहुँचा जा सके।

परिकल्पना

शोध कार्य को सही दिशा देने तथा उचित निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए परिकल्पना का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इस शोध आलेख में निम्नलिखित परिकल्पना प्रस्तावित है।

- भारतीय विदेश नीति भारत के राष्ट्रीय हितों को पूर्ति करने में सक्षम है।
- भारतीय विदेश नीति गतिशील एवं परिवर्तनशील है।
- समसामयिक विश्व में भारतीय विदेश नीति विभिन्न प्रकार के चुनौतियों का मुकाबला करने में भी सक्षम है।

निष्कर्ष: -

भारत की विदेश नीति सभी से मित्रता का प्रतीक है। यह किसी भी प्रकार के भौगोलिक या विचारधारा संबंधी मतभेदों के होते हुए भी सभी दोस्तों के साथ प्रभुसत्तात्मक मित्रता के लिए कार्य करने के सिद्धांत में विश्वास रखता है। भारत दोनों ही महाशक्तियों का मित्र रहा तथा इसने सभी साम्यवादी तथा गैर साम्यवादी देशों से मित्रता की। भारत दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा देश है। औद्योगिक तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्र में उन्नति के कारण भारत बड़ी शक्ति बनने की सामर्थ्य रखता है। वर्तमान विश्व में संबंधों के आयामों को आर्थिक आधार पर तौला जा रहा है। इसलिए भारत को भी अपने आर्थिक हित के हिसाब से ही विदेश नीति को आगे बढ़ाना चाहिए। पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को मजबूत और विश्वास वाली स्थिति में ले जाने का प्रयास करना चाहिए। वर्तमान में अमेरिका-चीन, इजराइल-फिलिस्तीन, चीन-अमेरिका, अमेरिका-रूस के बीच मनमुटाव है। इनके बीच न सिर्फ राजनीतिक बल्कि आर्थिक गतिरोध बढ़ गए हैं। ऐसे में भारत को कोई भी कदम सोच समझकर उठाना चाहिए क्योंकि इन सभी देशों के साथ उसके आर्थिक हित जुड़े हुए हैं। रूस हमारा पारंपरिक मित्र रहा है इसलिए अमेरिका से मजबूत रिश्ते के बावजूद उसे बेहतर संबंध आवश्यक है।

सन्दर्भ सूची:-

1. वी .एन . खन्ना एवं लिपाक्षी अरोड़ा, भारत की विदेश नीति , विकास पब्लिशिंग हाउस, प्रा.लि. ,पृष्ठ- 20
2. जे .एन . दीक्षित, भारतीय विदेश नीति, प्रभात प्रकाशन, 2017, पृष्ठ- 33
3. वी. एन. खन्ना, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, विकास पब्लिशिंग हाउस, प्रा.लि., पृष्ठ- 440
4. जे. एन .दीक्षित, भारतीय विदेश नीति , पृष्ठ- 48
5. यू. आर. घई, भारतीय विदेश नीति, न्यू एकेडमिक पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ- 270
6. Arun Mohanty, Toasting Legacy of Indo-Soviet Freindship Treaty, Russia and India Report, August 09, 2011
7. वेददान सुधीर, भारत की विदेश नीति: बदलते संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ- 188
8. शीला ओझा, भारतीय विदेश नीति का मूल्यांकन: 1970-1980, प्रिन्टेवेला, 1992
9. काशी प्रसाद मिश्र, भारतीय विदेश नीति, मैकमिलन प्रकाशन, पृष्ठ- 166
10. रहीस सिंह, वैश्विक संबंध, पियरसन, पृष्ठ- 144
11. State by Prime Minister at XIV Summit of Non-Alligned Movement
12. Highlights of Prime Minister Narendra Modi's Visit to India-Japan Annual Summit, 28-29 Oct, 2018
13. Highlights of Prime Minister Narendra Modi's Visit to India-Japan Annual Summit, 28-29 Oct, 2018
14. http://www.saarc-sec.org
15. South-South Cooperation Defies the North/Global Envasion, 18 Jan, 2014
16. Opening Statement by Prime Minister at 11th ASEAN-INDIA Summit in Brunei
17. Introduction to India's Foreign Policy, Embassy of India, 12 Nov, 2011
18. India and the World- http://www.indianembassy.org
19. India Blames Pakistan for Attack in Kashmir, Promising a Response, New York Times, 15 Feb, 2019